# डॉ. एल. एन. सारस्वत पंचतत्व में विलीन।

**अप्रैल 02 / रिपोर्टर / हिसार,**

शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं साहित्यकार डॉ. एल. एन. सारस्वत का कल सुबह उनके निवास स्थान सारस्वत सदन में स्वर्गवास हो गया। डॉ. सारस्वत शहर के जाने-माने चेहरों में से एक थे। सक्रिय और ऊर्जावान सारस्वत का जन्म हिसार के एक बहुत छोटे से गांव सिवानी में हुआ था, उनका परिवार आर्थिक रूप से मजबूत नहीं था और इस तरह उनके लिए समय अच्छा नहीं था। अपने माता पिता के जेष्ठ पुत्र होने के नाते उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को समझा एवं किशोरावस्था के दिनों में पढ़ाई के साथ-साथ वे अपनी माता के साथ मिलकर घर-घर जाकर काम किया करते थे। उन्होंने राजस्थान के सरदार शहर से बी.ए.एम.एस. की पढ़ाई को गोल्ड मेडल के साथ उत्तीर्ण किया था तथा 21 वर्ष की आयु में राजस्थान सरकार में पहले एम. ओ. और फिर एस. एम. ओ. का पद संभाला एवं साथ ही अपने 4 बहन भाइयों को शिक्षित किया और उनकी सभी आवश्यकताओं का भी वे ध्यान रखते थे।

डॉक्टर बनने के बाद की एक घटना ऐसी है कि सारे इलाके में महामारी फैल गई थी। डॉ. सारस्वत लगातार चार दिन बिना सोए रात दिन रोगियों की सेवा में जुटे रहे जो यह दर्शाता है कि वह कितने परिश्रमी, संघर्षशील, समर्पित तथा निष्ठावान थे। यही कारण है कि यह एक स्थान (शेरडा, राजस्थान) पर 20 वर्ष तक कार्यरत रहे। पांच बार इनको स्थानांतरित किया गया किंतु हर बार ग्रामवासी सरकार से अनुरोध कर इन्हें वापस शेरडा लेआए। यह इस बात का परिचायक है कि डॉक्टर साहब वहां कितने लोकप्रिय थे। सन् 1992 में 28 वर्षों तक कार्यरत रहने के बाद डॉ. सारस्वत ने स्वेच्छा सेवानिवृत्ति प्राप्त की और हिसार में स्थाई रूप से स्थानांतरित हुए।

हिसार में आगमन होते ही उनकी सामाजिक, साहित्यिक तथा धार्मिक गतिविधियों कि ओर अधिक विस्तार हुआ। उन्होंने प्रधान के रूप में राजस्थान आयुर्वेद विभाग चिकित्सक संघ, राजस्थान आयुर्वेद कल्याण संघ, रसराज केंद्र, विद्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, साहित्य कला संगम, अखिल विश्व गायत्री परिवार, हिसार, आर्य समाज, हिसार वृक्ष मित्र, जैसी कई संस्थाओं में अपनी सेवाएं दी। उन्होंने 50 से अधिक वर्षों तक जरूरतमंदों का मुफ्त में इलाज किया।

ऐसा भी नहीं था कि वह बहुत धनवान थे या कोई उद्योगपति या पूंजीपति थे या उनके घर में धन के अंबार लगे थे मगर उनके दिल में गरीबों के प्रति तड़प थी और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का असीम उत्साह था।

विद्यार्थी जीवन में उन्हें सर्वोत्तम विद्यार्थी, सर्वाधिक उपस्थिति, गोला फेंक क्रीडा में सर्वप्रथम स्थान, डिस्क थ्रो में प्रथम पुरस्कार एवं राजस्थान के राज्यपाल डॉ. संपूर्णानंद द्वारा रजत पदक से सम्मानित किया गया था। उनके राजकीय सेवा के दौरान उनको परलीका ग्राम पंचायत के सरपंच, युवक समाज सेवा संघ के प्रधान, ग्राम पंचायत शेरडा के सरपंच, श्रीगंगानगर के जिला स्वास्थ्य अधिकारी, पूर्व एमएलए ज्ञान सिंह चौधरी, आर्य सरोवर समिति के प्रधान, श्रीगंगानगर के जिलाधीश महोदय एवं स्वास्थ्य सचिव श्री आरजे मजीठिया द्वारा सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त उनको अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा डॉ. अंबेडकर फैलोशिप से राज्यपाल बाबू परमानंद, जनपथ, जनवादी नौजवान सभा, संत नामदेव पुरस्कार, शिवाली हाई स्कूल, आर्य समाज, मॉडल टाउन, हिसार, राष्ट्रीय सेवा योजना, अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा डॉ. अंबेडकर सेवा श्री राष्ट्रीय पुरस्कार से पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, हरियाणा निजी स्कूल संघ, साहित्य कला संगम, ब्राह्मण सभा हिसार, पंजाब नेशनल क्रीडा में बैंक, एवं अमेरिकी एजेंसी ए. वी. आई द्वारा मैन ऑफ द ईयर 2002 अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से उनको सम्मानित किया गया था। वह जनसभाओं में लोगों को शिक्षा के महत्व के बारे में, महिलाओं को सशक्त एवं शिक्षित बनाने के बारे में, आदर्श जीवन कैसे जीना चाहिए, आदि विषयों पर शिक्षित करते थे। ऐसे उत्तम व्यक्तित्व के धनी डॉ. सारस्वत का चले जाना समाज एवं देश के लिए एक अक्षुण क्षति है।

कोरोना महामारी के चलते उनका अंतिम संस्कार बीती शाम 4:30 बजे कुछ सीमित परिजनों की उपस्थिति में हुआ जिसमें मुखाग्नि उनके बेटे डॉ. विजय सारस्वत ने दी। अंतिम संस्कार के समय मुख्य तौर पर कार्तिकेय सारस्वत, भारत भूषण शर्मा, अतुल जोशी, देवेंद्र सारस्वत, राधेश्याम चतुर्वेदी, डॉ. महिपाल मुंजाल, डॉ. यशपाल मुंजाल, सुरेंद्र पाल वर्तीया, राजेंद्र गुप्ता, वैभव शर्मा, प्रज्वल जोशी आदि उपस्थित रहे।

**DAINIK JAGRAN (02.04.2020)**